REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2022

"दलित आत्मकथा 'घुटन' में क्रियात्मक और प्रायोगिक द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता का अनुशीलन"

प्रा.राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे
आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढ़ा,
तहसील. जावली, जि. सातारा, (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :-

भारत में स्थित वर्ण तथा जाति व्यवस्था के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि चार वर्णों के अनुरूप सामाजिक व्यवस्था का संप्रेषण हुआ है | शूद्रों को निम्नस्तरीय स्थान दिया गया है | परिणामत: सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों की दृष्टि से शूद्रों की स्थिति दीन-हीन हैं | अपितु जिन्हें पिछड़ने के लिए मजबूर एवं असहाय किया गया है वह समग्र पिछड़ी जातियाँ दलित हैं | डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने हीन-दीन, दलित, सर्वहारा, शोषित, पीड़ित, अक्षरशून्य समाज को वाणी देने का कार्य किया हुआ हैं| उन्होंने संविधान में 'स्वतंत्रता, समता, बंधुता और न्याय इन तत्त्वों को समाविष्ट किया हैं | तत्त्वतः समस्त भारतीय समाज व्यवस्था को समानता का अधिकार दिया हैं | फलस्वरूप दीन-हीन, दलित, सर्वहारा वर्ग को वाणी मिली | शोषण से मुक्ति मिली हुई हैं|

दलित शब्द :-

दलित अवधारण को स्पष्ट करते हए आरंभ में विचारक श्रीमती एनी बेसेंट ने हाशिए का समाज, शोषित, पीड़ितों के लिए 'डिप्रेस्ड' शब्द निर्देशित किया गया था | दार्शनिक माता प्रसाद लिखित ग्रंथ 'दलित जातियों का दस्तावेज' में दलित शब्द के विभिन्न अर्थ उद्धृत है- "दलित = दल+त-टूटा हुआ, कटा हुआ, फैला हुआ | दल् =चूर-चूर करना, फाड़ देना | दलित = डाला गया, मर्दित, पीसा गया, विनष्ट किया गया | मानक अंग्रेजी शब्दकोश में दलित शब्द के लिए'डिप्रेस्ड' शब्द दिया गया है जिसका अर्थ दबाना, नीचे करना, झुकाना, विनत करना, नीचे करना, धीमा करना, मलामत करना, दिल तोड़ना है |"[1]

भारतीय जाति संरचना :-

समस्त भारत में समाज संरचना जाति पर आधारित हैं| विद्वान माता प्रसाद सामाजिक विषमता के हीन पायदान पर जीवन व्यतीत करने वाले दलित वर्ग का अर्थ प्रतिपादित करते है- "दलित वर्ग का अर्थ प्राय: नीची जातियों के अछूत वर्ग से लगाया जाता है| किंतु दलित वर्ग का अर्थ अस्पृश्य वर्ग ही नहीं अपितु सामाजिक रूप से अविकसित, पीड़ित, शोषित निम्न जातियों के वर्गों की भी गणना दलित में होती है |"[2] अत: दार्शनिक माता प्रसाद जीने दलित जातियों का वर्गीकरण किया है- "1)अनुसूचित जातियाँ, 2)अनुसूचित जनजातियाँ, 3)भूतपूर्व अपराधकर्मी जातियाँ और घुमंतू जातियाँ, 4)अत्यधिक पिछड़ी जातियाँ और 5)पिछड़ी जातियाँ"[3] आदि |

उद्देश्य :-

दलित आत्मकथा 'घुटन' में स्थित बहुभाषिकता के भाषाई प्रयोग का अनुशीलन करते हुए व्यक्तिगत भाषा और भाषाई सामाजिक समूहों की भाषाओं में स्थित भाषाई वर्तन व्यवहार को परिचित कराना मेरे शोध निबंध का उद्देश्य है

बीज शब्द :-

वर्ण, जाति, दलित, आत्मकथा, सामाजिकता, सामाजिक समूह, समाजभाषाविज्ञान, द्विभाषिकता, बहुभाषिकता, भाषाई वर्तन व्यवहार आदि|

डॉ. रमाशंकर आर्य का परिचय :-

दलित आत्मकथाकार डॉ. रमाशंकर आर्य का जन्म बक्सर जिले के सुदूर गाँव में एक दलित दुसाध जाति परिवार में हुआ| इन्होंने आरंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही प्राप्त की थी| साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु बक्सर, आरा, बनारस एवं पटना गए| उनके पिता पुलिस के रूप में जेल में सिपाही थे| उन्हें आर्यसमाज की शिक्षाओं से बहुत बड़ा लगाव था| डॉ. रमाशंकर आर्य बिहार महाविद्यालय सेवा आयोग के सदस्य प्रधानाचार्य बी.डी. इवनिंग कॉलेज, मीठापुर (मगध वि.वि.) पटना साथ ही प्रति कुलपति, कुलपति, वीर कुंवर वि.वि. आरा भोजपुर रहे हैं|

घुटन (दलित आत्मकथा) :-

दलित आत्मकथाकार डॉ. रमाशंकर आर्य द्वारा लिखित 'घुटन' सन् 2007, ईसवीं में 'नेहा प्रकाशन' दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 136 पृष्ठों की दलित आत्मकथा हैं|

दलित आत्मकथा 'घुटन' में भाषाई समाजों की बहुभाषिकता :-

'समाजभाषाविज्ञान' में भाषा संपर्क प्रक्रिया के भाषाई वर्तन व्यवहार में बोली जाने वाली भाषाओं का विश्लेषण करने वाली (द्विभाषिकता) बहुभाषिकता यह अवधारणा हैं। विद्वान हॉगेन द्विभाषिकता की परिभाषा स्पष्ट करते है- "दो भाषाओं के ज्ञान की स्थिति द्विभाषिकता है|"[4] भाषाई प्रायोगिकता के स्तर पर द्विभाषिकता का अनुशीलन करते हुए वाइनराइख द्वारा निर्देशित- "दो भाषाओं का विकल्प से एक के बाद एक प्रयोग की स्थिति ही द्विभाषिकता है|"[5] दो भाषाएँ अथवा बहुभाषाएँ जानने वाला व्यक्ति, विशेष क्षेत्र, भूप्रदेश या देश के भाषाई समाज भाषाई वर्तन व्यवहार करते हुए भाषाई सामाजिक समूहों का संपर्क व्यवहार द्विभाषिकता या बहुभाषिकता काहोता हैं। एक या एक से अधिक भाषाओं को बोलना, समझना, पढ़ना, लिखना यह व्यक्तिगत तथा सामाजिक सामर्थ्य हो सकता हैं साधारणत: बहुभाषिकता को द्विभाषिकवाद तथा बहुभाषावाद साथ ही संक्षेप में भाषाएँ भी कहा जाता हैं| दो भाषाओं से अवगत होनेवाला भाषाई सामाजिकसमूह का व्यक्ति भाषाई संपर्क व्यवहार करता है| उन दो भाषाओं में से किसी एक विशिष्ट भाषा पर उस व्यक्ति का प्रभाव, सामर्थ्य और प्रबलता होती है| वह भाषा उसकी मातृभाषा होती है| साधारणत: उस व्यक्ति के प्राप्त ज्ञान के आधार पर ज्ञात दूसरी भाषा कार्य उद्देश्यों के लिए प्रसंगों के अनुरूप बहुचर्चित भाषा संपर्कमें प्रयोग करती है। उन्हीं उच्चरित भाषाओं में से प्रत्येक भाषा का कार्यक्षेत्र यह विभाजित करते हुए लिया जाता है। घर और स्वसमाज और ज्ञात भाषाई सामाजिक समूहों में मातृभाषा में संचरण या वर्तन व्यवहार होता हैअत: व्यक्ति विशेष के मातृभाषा से अनभिज्ञ भाषाईसामाजिक समूहों में आवश्यकता के अनुसार अन्य भाषा ऐसा विभाजन होता है। इसी आधार पर इस द्विभाषाई भाषा स्वरूप का भाषाई सामाजिक समूहों के सामाजिक स्तर के अनुसार अध्ययन किया जा सकता है। इस द्विभाषाई अवधारणा के अनुरूप ही 'समाजभाषाविज्ञान' में और एक संकल्पना प्रस्तुत की जाती है। उसे बहुभाषावाद कहते हैं। दो या दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग बहुभाषी करता है| ब्लूम फील्ड ने बहुभाषिकता की परिभाषा प्रस्तुत की है- "बहुभाषिकता की स्थिति तब पैदा होती है जब व्यक्ति किसी ऐसे समाज में रहता है जो उसकी मातृभाषा से अलग भाषा बोलता हैऔर उस समाज में रहते हुए वह उस अन्य भाषा में इतना पारंगत हो जाता है कि उस भाषा का प्रयोग मातृभाषा की तरह कर सकता है|"[6] किसी व्यक्ति या देश के भाषा संपर्क व्यवहार में तीन या तीन से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है, तब ऐसे भाषा संपर्क व्यवहार को बहुभाषावाद कहा जाता हैं।

हिंदी भाषा एवं उपभाषाएँ तथा उनकी बोलियों का वर्गीकरण:-

भारत की हिंदी यह प्रमुख भाषा हैं| अत: इस प्रमुख भाषा की पाँच प्रमुख उपभाषाएँ हैं| इन पाँच उपभाषाओं की भी बोलियाँ और उपबोलियाँ हैं | दलित आत्मकथा के भाषाई सामाजिक समूहों की इन अवधारणाओं के अनुसारविद्वान माता प्रसाद के वर्गीकरण के अनुरूप यह भाषाई समाज परिवार और स्वसमाज में मातृभाषा का प्रयोग करते है| हिंदी भाषा वर्गीकरण में उद्धृत हिंदी भाषा की पाँच उपभाषाएँ और उन उपभाषाओं के अंतर्गत बोलियाँ अंकित की हैं वह निम्न है-

"1) पूर्वी हिंदी- बघेली, छत्तीसगढ़ी, अवधी आदि|

2) पश्चिमी हिंदी- ब्रजभाषा, खड़ी बोली, बुन्देलखंडी, कन्नौजी बंगारू आदि|

3) बिहारी हिंदी- मैथिलि, मगही, भोजपुरी आदि|

4) राजस्थानी हिंदी- मालवी, मेवाती, मारवाड़ी, जयपुरी आदि|

5) पहाड़ी हिंदी में कुमाउनी, गढ़वाली आदि|"[7]

यह भाषाई परिवार और भाषाई सामाजिक समूह मातृभाषा का और भाषा संपर्क व्यवहार में प्रसंग के अनुरूप हिंदी का उपयोग करते हैं। "भारत जैसे बहुभाषी देश में ऐसे द्विभाषी या बहुभाषी समाजों के दृश्य नए नहीं हैं। शिक्षा में भाषा की शिक्षा पर जोर देने से शिक्षित समाज निर्विवाद रूप से बहुभाषी प्रतीत होता है।"[8]

दलित भाषाई सामाजिक समूहों के भाषाई वर्तन व्यवहार :-

दलित लेखक डॉ. रमाशंकर आर्य ने दलित भाषाई सामाजिक समूहों के भाषाई वर्तन व्यवहार का अनुशीलन कियाहैं । इस प्रमाण के अनूरूप डॉ. रमाशंकर आर्य के शिक्षित होने के उपरांत उन्होंने भाषाई रचना की है। अपितु इस भाषाई रचना के प्रधानता के सदृश मानक हिंदी, गैर-मानक हिंदी, हिंदी शब्द या वाक्यांशऔर अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत आदि भाषाओं के शब्द विभिन्न भाषाई सामाजिक समूहों के संपर्क में आने वाले लोगों की भाषाएँ'घुटन' आत्मकथा में अभिव्यक्त की गई हैं । यह भाषा भले ही आत्मकथाकार को ज्ञात हो या नहीं हो लेकिन आत्मकथा में अभिव्यक्त हुई है| जब 'घुटन' में भाषाई सामाजिक समूहों का द्विभाषावाद और बहुभाषावाद का विचार करते हुए विवेक की आवश्यकता है। तब किसी एक समाज में एक से अधिक भाषाएँ विद्यमान होती है और उनका उपयोग किया जाता हो, तो असाधारण संदर्भों में अधिक वह किस भाषा का उपयोग करता है इसकी यहाँ हम चर्चा एवं चिंतनकर सकते हैं।

दलित आत्मकथा 'घुटन' में भाषाई सामाजिक समूह द्विभाषी एवं बहुभाषी समाज :-

दलित आत्मकथा 'घुटन' में भाषाई सामाजिक समूह यह द्विभाषी तथा बहुभाषी समाज हैं।साधारणत: वह एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। यथार्थ रूप में इन समग्र भाषाओं का सटीक ज्ञान हो भी सकता है और नहीं भी|यह उन व्यक्तियों के ज्ञान पर निर्भर करता है। 'घुटन' में कुछ भाषाई सामाजिक समूहों को उनकी बोली के अनुसारप्रारंभ में शिक्षा प्राप्त करने हेतु अन्य भाषाओं का ज्ञान उन्हें प्राप्त होता हैं और उन ज्ञात भाषाओं के आधार पर मातृभाषा के साथसाथ अन्य भाषाओं के कुछ शब्द वाक्य या प्रोक्ति का बोलते समय प्रयोग करते है| विशेष रूप से अंग्रेजी शब्द वाक्यांशों की क्रियात्मकता और प्रायोगिकता प्रमुख रहती है| दलित चिंतक "डॉ. रमाशंकर आर्य"[9] के दलित आत्मकथा 'घुटन' में स्थित द्विभाषिकता, बहुभाषिकता और विभिन्न भाषाई सामाजिक समूहों के भाषाई वर्तन व्यवहारशब्दों को प्रतिपादित किया गया है- 'ब्लैक एंड व्हाइट प्रिंट(पृ.17), फुटबॉल'(पृ.20), 'बुकलेटों'(पृ.26), 'मिडिल स्कूल'(पृ.26), 'अल्फाबेटिकल'(पृ.27), 'किलोमीटर'(पृ.28), टाइटिलधारी'(पृ.31), 'साइंस'(पृ.32), 'आर्टस'(पृ.32), 'एक्सटेंशन'(पृ.33), 'कैंसर'(पृ.33), 'हेडमास्टर'(पृ.33), 'फर्स्ट-सेकंड-थर्ड'(पृ.33), 'फ्रस्टेशन-करप्शन'(पृ.33) 'क्राइम'(पृ.33) 'स्कूल फीस'(पृ.34), 'अंडरवियर'(पृ.34), 'मैट्रिक'(पृ.34), 'टिफिन'(पृ.35), 'फरमाइश'(पृ.35), 'मैट्रिकुलेशन'(पृ.37), 'ओवरब्रिज'(पृ.37), 'स्टीमर'(पृ.37), 'प्रेस'(पृ.37), 'रिजल्ट'(पृ.38), 'क्लास रूम'(पृ.40), 'ग्रेजुएसन'(पृ.41), 'यूनिवर्सिटी'(पृ.41), 'फर्स्ट क्लास'(पृ.41), 'हंटर'(पृ.41), 'वारन्ट'(पृ.42), 'मेरिट'(पृ.43), 'मार्क्सशीट'(पृ.43), 'डायलिसिस'(पृ.45), 'प्लेटोनिक लव'(पृ.45), 'प्लास्टिक'(पृ.46), 'फैशन'(पृ.47), 'सेमिनार(पृ.48), 'क्वार्टर'(पृ.51), 'कान्सेप्ट'(पृ.53), 'क्रॉस'(पृ.53), 'कैरियर'(पृ.55), 'सीनेट'(पृ.55), 'कोचिंग'(पृ.56), 'ट्यूशन'(पृ.56), 'डायवर्सन'(पृ.56), 'कोटेशन'(पृ.58), 'फर्स्टएड' (पृ.59), 'परमानेंट क्योर'(पृ.59), 'टेम्परॉरी रिलीफ'(पृ.59), 'फर्स्ट इसू'(पृ.62), 'डॉक्टर'(पृ.62), 'टाइम'(पृ.62), 'सिम्पथाइजर'(पृ.64), 'कैम्प'(पृ.65), 'स्टोव-हीटर'(पृ.68), 'स्टैण्ड'(पृ.68), 'कोचिंग'(पृ.69), 'बैलेट पेपर'(पृ.73), 'इलेक्टोरल'(पृ.73), 'नोटिस'(पृ.77), रेसिडेंशियल'(पृ.78), 'ज्वाइन'(पृ.80), 'टाइटिल'(पृ.80), 'कोचिंग'(पृ.83),

'फैसिलिटी'(पृ.84), 'इंटर काउंसिल(पृ.85), 'कैश'(पृ.86), 'क्रेडिट'(पृ.86), 'क्लर्क'(पृ.86), 'कमिश्नर'(पृ.88), 'बैंक ऑपरेट'(पृ.89), 'शिफ्टों'(पृ.88), 'सेक्शनों'(पृ.107), 'आउट'(पृ.107), 'प्रोटोकॉल'(पृ.112), 'टेबुलेशन'(पृ.124), 'अनइम्प्रेसिव'(पृ.132), 'स्लीपिंग ड्रेस'(पृ.128), 'वेल ड्रेस'(पृ.133), आदि में इन वाक्यों में कही अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है

दलित आत्मकथा 'घुटन' में स्थित संक्षिप्त शब्द रूपों की क्रियात्मकता और प्रायोगिकता का व्यावहारिक कार्य:-

दलित आत्मकथा 'घुटन' में भाषाई सामाजिक समूह में स्थित भाषाई वर्तन व्यावहारिक कार्य में संक्षेप भाषाई शब्द रूपों का भी प्रचुर मात्रा में क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता स्पष्ट निर्देशित होती हैं डॉ. रमाशंकर आर्य[10] द्वारा लिखित 'घुटन' आत्मकथा में स्थित संक्षेप शब्द रूपों को प्रस्तुत किया गया हैं- 'एच.पी.डी.जैन कॉलेज'(पृ.40), बी.एच.यू.'(पृ.42), 'बी.एन.कॉलेज'(पृ.56), 'आई.पी.एफ.' (पृ.64), 'पी.एम.सी.एच.' (पृ.65), 'आइ.ए.एस.' (पृ.69), 'बी.पी.एस.सी.' (पृ.69), 'भासू- B.H.A.S.U.(बिहार हरिजन-आदिवासी स्टूडेंट्स यूनियन)' (पृ.77), 'यू.जी.सी.' (पृ.83), 'प्रो.ए.के.धान(आदिवासी)' (पृ.83), 'आई.ए.-बी.ए.' (पृ.87), 'बी.डी.इवनिंग कॉलेज'(पृ.88), 'पी.ए.गिरी'(पृ.110), 'प्रो.बी.एन.रावत'(पृ.128), 'टी.जी.टी.विज्ञान'(पृ.132), आदि संकेत शब्द रूप अंकित हैं| दलित आत्मकथा 'घुटन' में भाषाई सामाजिक समूह में स्थित भाषाई वर्तन व्यावहारिक कार्य में संक्षेप भाषाई शब्द रूपों का भी प्रचुर मात्रा में क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता स्पष्ट निर्दिष्ट होती हैं|

'घुटन' आत्मकथा में निर्देशित मुहावरों, लोकोक्तियाँ एवं कहावतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता:-

दलित आत्मकथा 'घुटन' में अंकित भाषाई समाज की भाषाई वर्तन व्यवहार यह द्विभाषी तथा बहुभाषी हैं।साधारणत: वह एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। यथार्थ रूप में इन समग्र भाषाओं का सटीक ज्ञान हो भी सकता है और नहीं भीयह उन व्यक्तियों के ज्ञान पर निर्भर करता है। 'घुटन' में कुछ भाषाई सामाजिक समूहों को उनकी बोली के अनुसार प्रारंभ में शिक्षा प्राप्त करने हेतु अन्य भाषाओं का ज्ञान उन्हें प्राप्त होता हैं और उन ज्ञात भाषाओं के आधार पर मातृभाषा के साथसाथ अन्य भाषाओं के कुछ शब्द वाक्य, लोकोक्तियाँ एवं कहावतों की भी प्रचुर मात्रा में प्रायोगिकता स्पष्ट होती हैं-

प्रचलित कहावते :- "बनिहार की बेटी को न नैहरे सुख न ससुरे सुख'[11]
अनिष्ट शब्द प्रयोग कहावते :- "सभी कुत्ते काशी जाएँगे तो जूठी हाँडीकौन चाटेगा' [12], "ऊँच निवास नीच करतूती"[13]

लोकोक्तियाँ :-

1) "भूल गये राग-रंग भूल गये फक्कड़ी, तीन चीज याद रही-नून-तेल-लकड़ी|"[14]
2) "कोल्हू का बैल बना रहना" (पृ.72)
3) "बड़े तीसमार खां बने रहे' (पृ.72)
4) "उल्लू सीधा किया"(पृ.108)

मुहावरे :- 'नहले पर दहला'(पृ.107), तोड़-फोड़ पर उतारू हो जाना'(पृ.125)

दलित आत्मकथा 'घुटन' में डॉ.रमाशंकर आर्यजीने मीर की काव्य पंक्तियों को दृष्टिगोचर किया हैं | वह निम्न हैं-

मीर की काव्य पंक्तियाँ :-

"यहाँ सब कुछ जाना-पहचाना सा लगे है,
आपसे मिलने का अंदाज पुराना सा लगे है
हाल परायों का क्या पूछे हो, मेरे यार
यहाँ तो खुद ही खुद को बेगाना लगे है"[15]

राष्ट्रकवि दिनकर की काव्य पंक्तियाँ :-

"घंटा बजते आते हैं
घंटा बजते जाते हैं
घंटा भर क्लास में घंटा पढ़ाते हैं"[16]

शायर की पंक्तियाँ :- "हमदम की कसम, हमदम के लिए, हमदम से गए, हमदम न मिला;
अच्छा न हुआ ये जख्मे जिगर मर हम भी गये, मरहम न मिला|" (पृ.120)

तुलसीदास की चौपाई :- "बूँद आघात सहत गिरी कैसे, खल के वचन संत सह जैसे|"[17]

घोषणा एवं नारे :- 'जात तोड़ो, जमात जोड़ो'(पृ.117), 'जिंदाबाद-मुर्दाबाद'(पृ.125),
उर्दू-फारसी शब्द शब्द संकेत :- 'समुल्लास', 'तरजीह', इजाफा' आदि |

संस्कृत :- 'अहम ब्रह्मस्मि'(पृ.92), 'रज-वीर्य'(पृ.93), 'छान्दोग्योपनिषद'(पृ.115), 'वाक्पटुमार्तंड'(पृ.121)

इसी तरह दलित लेखक डॉ.रमाशंकर आर्य जी ने दलित आत्मकथा में प्रचलित कहावते, अनिष्ट शब्द संकेत कहावते, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, संत मीराबाई, राष्ट्रकवि दिनकर की कुछ काव्य पंक्तियाँ, शायरी, तुलसीदास की चौपाई घोषनाएँ एवं नारे, उर्दू-फारसी शब्द संकेत तथा संस्कृत शब्द संकेत आदि क्रियात्मक और प्रायोगिक शब्द संकेतों द्वारा प्रायोगिक द्विभाषिकता, बहुभाषिकता, व्यक्तिगत बोली एवं सवर्ण-दलित भाषाई वर्तन व्यवहार को निर्दिष्ट किया गया हैं |

'घुटन' आत्मकथा में निर्देशित अंत्यानुप्रास या तुकांत शब्द संकेतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता-

दलित आत्मकथा 'घुटन' में अंत्यानुप्रास तथा तुकांत शब्द संकेतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता को स्पष्ट किया हैं | वह निम्न हैं - 'हरा-भरा', 'छूत-अछूत', 'ऊबड़-खाबड़', 'सानी-पानी', 'रोपनी-डोयनी', 'उठने-बैठने', 'मिला-जुलाकर', 'अरे-तरे', 'ओत-प्रोत', 'चहल-पहल', 'यत्र-तत्र', 'खाने-पीने', 'मरनी-हरनी', 'दवा-दारू', 'तन-मन-धन', 'अनाप-सनाप', 'बचा-खुचा', 'खान-पान', 'रहन-सहन', गुण-लक्षण', 'फूल-फल', 'देखा-देखी', 'जाल-जंजाल', 'अनौती-मनौती', 'तुम-ताम', 'मिलता-जुलता', 'मिल-जुलकर', 'जात-पाँत', 'मौके-बेमौके', अता-पता', 'आस-पास', 'भक-भूक', 'आना-जाना', 'चना-चबेना', 'नौकर-चाकर', 'बाँटकर-काटकर', 'दुराग्रहों-पूर्वाग्रहों', 'रगड़ा-झगड़ा', 'हाव-भाव', 'सुनकर-जानकर', 'मरनी-हरनी', 'छोटी-मोटी', 'यदा-कदा', 'अनुनय-विनय', ठोकी-ठाकी', 'जाति-उपजाति', 'पठन-पाठन', 'बढ़-चढ़कर', 'यत्र-तत्र', 'हाल-चाल', 'कर्मा-धर्मा', 'फूलता-फलता', 'घुलता-मिलता', 'ऊँच-नीच', 'तन-मन', 'अलग-थलग', सहमत-असहमत', 'वर्ग-दुश्मनों', रफा-दफा', 'जच्चा-बच्चा', जोश-खरोश', जीर्ण-शीर्ण', 'घात-प्रतिघात', 'साँचा-ढाँचा', 'विद्यालयों-विश्वविद्यालयों', 'ज्ञान-विज्ञानं', जात-पांत' आदि दलित आत्मकथा 'घुटन' में अंत्यानुप्रास तथा तुकांत शब्द संकेतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता को स्पष्ट किया हैं |

'घुटन' आत्मकथा में निर्देशित पुनरुक्त अंत्यानुप्रास या तुकांत पुनरुक्त शब्द संकेतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता-

दलित आत्मकथा 'घुटन' में पुनरुक्त अंत्यानुप्रास तथा तुकांत पुनरुक्त शब्द संकेतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता निर्देशित की हैं | 'पग-पग', चोट-दर-चोट', 'जन्म-जन्मांतर', 'सब-के-सब', 'दल-दल', 'महीने-दो-महीने', 'मन-ही-मन', 'जल्द-से-जल्द', 'मत-मतांतर', 'घंटा-दो घंटा', 'साथ ही साथ', 'चूर-चूर', 'करीब-करीब', 'रहते-रहते', 'बारी-बारी', 'सहमे-सहमे', 'रोम-रोम', 'घृणा ही घृणा', 'आदि-आदि', 'बल-बल', 'कभी-कभी', 'तू-तू मैं-मैं', 'घंटा-दो-घंटा', 'बात-बात', 'साथ-साथ', 'संभल-संभल', 'बच-बचाकर', 'बँटते-बँटते', 'धीरे-धीरे', 'सदा-सदा', 'कदम-कदम', 'सात-सात', 'केंचुले-दर-केंचुले', 'उतारते-उतारते', 'पहुँचते-पहुँचते', 'अपने-अपने', 'छोटे-छोटे', 'कूट-कूट', 'बारी-बारी', 'ख़ुशी-ख़ुशी', 'चूर-चूर', 'साफ़-साफ़', 'ख़ास-ख़ास', जैसे-जैसे', 'वैसे-वैसे', 'जब-जब', 'आते-आते', 'टरटराहट', 'गिरते-गिरते', 'ठहर-ठहर', 'टुकड़ों-टुकड़ों', 'कल-कल', 'गंदगी-ही-गंदगी', 'थल-थल', 'देख-देख', 'सभी-के-सभी',

'गटागट', 'अन्त-अन्त', 'परिक्रमा-दर-परिक्रमा', 'कुछ-कुछ', 'चक्कर-दर-चक्कर', 'क्या-क्या', 'सहते-सहते', टूटते-टूटते', 'साथ-साथ', 'धुक-धुक', 'खचाखच', 'भोले-भोले', 'चप्पे-चप्पे', 'गली-गली', 'सड़क-सड़क', 'मुहल्ला-मुहल्ला', 'चर्चा-दर-चर्चा', 'बहस-दर-बहस', 'कदम-कदम', 'फुर्सत-ही-फुर्सत', 'अमुक-अमुक', 'गोपनीय-से-गोपनीय' आदि दलित आत्मकथा 'घुटन' में पुनरुक्त अंत्यानुप्रास तथा तुकांत पुनरुक्त शब्द संकेतों की क्रियात्मकता एवं प्रायोगिकता को अंकित किया हैं|

निष्कर्ष :-

इसी तरह डॉ. रमाशंकर आर्य द्वारा लिखित हिंदी दलित आत्मकथा'घुटन' में क्रियात्मक एवं प्रायोगिक शब्द संकेतों को निर्दिष्ट किया गया हैं| भाषाई सामाजिक समूहों के भाषाई रूप बनने लगते हैं। अत: भाषा की दृढ़ता भिन्न प्रसंगों के अनुरूप होती है| दलित आत्मकथा 'घुटन' की गई द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता का निर्देशन किया गया हैं| यह बहुभाषाई सामाजिक समूह भाषाई वर्तन व्यवहार में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग कैसे करने लगे इसका भी नियमित गहन अध्ययन किया हैं | साथ ही लक्षित चिंतन योग्य हैं। इन भाषाई सामाजिक समूहों में धीरे-धीरे अन्य भाषाओं की पद्धति भी विकसित हो जाती है तब यह भाषाई सामाजिक समूह उन्हीं भाषा के भाषाईयों के साथ संपर्क प्रस्थापित करते हुए उस भाषाईयों की भाषा में बोलने लगते हैं।घर, परिवार और रिश्तेदारों के वर्तुल के संदर्भ में मातृभाषा का प्रयोग करते हैं। व्यावसायिक, शिक्षा, नौकरी हेतु अन्य भाषाईयों के साथ जो संबंध आता है उस स्थिति के अनुरूप उस समय उन्हें अपनी भाषा में परिवर्तन करना पड़ता है। यह सब अनुसूचित जाति शिक्षित व्यापार- व्यावसायिक, नौकरी आदि करनेवाला भाषाई सामाजिक समूह व्यापार, नौकरी, पेट भरने हेतु समग्र भारत में देशाटन करतेहैं | तभी वह जिन क्षेत्रों में जाते है उसी क्षेत्र की गैर-मानक भाषा बोलते रहते है। इस भाषा में ही दलित आत्मकथा के अनुसूचित जाति व्यापार-व्यवसाय, नौकरी और शिक्षित भाषाई सामाजिक समूहों का भाषाई व्यवहार निर्देशित हुआ है। वह अपनी भाषा बोलता है यदि उसी क्षेत्र की संपर्क व्यवहार की भाषा और कभी किसी अन्य भाषा से संपर्क में आ जाए तो संपर्क में आई भाषा बोलता है।डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के लिखित संविधान ने वाणीविहीन एवं अक्षरशत्रू समाज को सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक आदि परिस्थितियों की दृष्टि से अधिकार दिए हैं| फलस्वरूप वाणी विहीन समाज बोलने लगा, अक्षरशत्रू समाज पढ़ने-लिखने लगा | परिणामत: सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक आदि परिस्थितियों की दृष्टि से दलितों में विकसित परिवर्तन हुआ हैं| अत: दलित आत्मकथा 'घुटन' के अनुसूचित जाति, शिक्षित, व्यापार-व्यवसाय, नौकरी करनेवाले भाषाई सामाजिक समूहों के भाषाओं का स्वरूप द्विभाषाई एवं बहुभाषाईहैं, ऐसा निर्देशित किया जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. माता प्रसाद: 'उत्तराखंड सहित उत्तर प्रदेश की दलित जातियों का दस्तावेज', सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृ.सं. 22
2. माता प्रसाद: 'उत्तराखंड सहित उत्तर प्रदेश की दलित जातियों का दस्तावेज', सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृ.सं. 22
3. माता प्रसाद: 'उत्तराखंड सहित उत्तर प्रदेश की दलित जातियों का दस्तावेज', सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृ.सं. 22
4. https://hi.m.wikipedia.org
5. https://www.sanchar.com
6. https://hi.m.wikipedia.org
7. https://testbook.com
8. काळे कल्याण: समाजभाषाविज्ञान: स्वरूप व व्याप्ती 'सामाजिक भाषाविज्ञान', संपा. प्रभाकर जोशी, सौ. चारुता गोखले, निराळी प्रकाशन, पुणे, प्रथम संस्करण, 1993, पृ. सं. 18
9. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007.
10. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007.
11. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 15
12. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 56

13. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 114
14. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 115
15. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 54
16. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 80
17. डॉ.रमाशंकर आर्य : 'घुटन', नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 56